



“जनपद पिथौरागढ़ के भानेला गांव में पलायन की स्थिति, कारण और प्रभाव पर एक अध्ययन”

भावना बोरा

शोधार्थी भूगोल विभाग

लक्ष्मण सिंह महर परिसर भूगोल विभाग (उत्तराखण्ड)

डॉ. पुष्पा पंत जोशी

भूगोल विभाग

लक्ष्मण सिंह महर परिसर भूगोल विभाग (उत्तराखण्ड)

आमुख

प्रस्तुत अध्ययन उत्तराखण्ड के सीमांत क्षेत्र पिथौरागढ़ जिले के विकासखण्ड बेरीनाग में स्थित राजस्व ग्राम में पलायन कर लगभग खाली हो चुके भानेला गांव पर की गई है जो कि धीरे-धीरे जन शून्य की ओर बढ़ा है और भूत गांव (Ghost village) की श्रेणी में आ रहा है। आज यह गांव लगभग वीरान हो चुका है। जिसका प्रमुख कारण पिछले कुछ वर्षों में गांव में तेजी से बढ़ता पलायन है। परिणाम स्वरूप वर्तमान समय में कुछ ही परिवार इस गांव में शेष रह गये हैं। सर्वेक्षण और साक्षात्कार के माध्यम से परिवारों की संख्या में कमी खेती तथा सामाजिक जीवन में बदलावों को समझते हुए अध्ययन में पाया गया कि गांव में सङ्करों के अभाव, आधारभूत सेवाओं और भौगोलिक दुर्गमता की कमी के चलते यह एक गंभीर समस्या बन चुका है तथा इस क्षेत्र के ग्रामीण जीवन को प्रभावित किया है। गांव में पलायन की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण पारंपरिक कृषि प्रणाली और ग्रामीण विकास प्रभावित हुआ है। इस स्थिति से निपटने के लिए कृषि आधुनिकीकरण, रोजगार सृजन और ग्रामीण आधारभूत संरचना में सुधार आवश्यक हैं। यह अध्ययन भानेला गांव की वर्तमान स्थिति और कृषि परिवृश्य में आए बदलावों, पलायन के कारणों, प्रभावों की पहचान करने और संभावित समाधानों की ओर सुझाव प्रस्तुत करने का प्रयास है।

मुख्य शब्द :- पलायन, वीरान, भूत गांव, जन शून्य, मूल निवास।

प्रस्तावना

उत्तराखण्ड राज्य के पर्वतीय क्षेत्रों में पलायन एक गंभीर स्थाई समस्या बन चुकी है। जिले में कई गांव पलायन की मार झेल रहे हैं। जिसमें राज्य का पूर्वी जिला पिथौरागढ़ भी शामिल है। कहीं प्राकृतिक आपदा जैसे भूकंप, बाढ़, बादल फटना आदि, इसके लिए जिम्मेदार है तो कहीं मूलभूत सुविधाओं के अभाव जैसे रोजगार व शिक्षा पलायन का कारण रही है। गांवों से शहरों की ओर बड़ी संख्या में पलायन की प्रवृत्ति से न केवल गांव वीरान हो रहे हैं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से परिवर्तन और संकट के भी संकेत उत्पन्न हो रहे हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और संचार की कमी स्थानीय लोगों को मूल निवास स्थान से पलायन करने पर मजबूर कर देती है जिस कारण जनसंख्या का तेजी से बहिर्गमन हो रहा है। परिणाम स्वरूप कस्बे नगरों में परिवर्तित होते जा रहे हैं। विकास खण्ड बेरीनाग के एक गांव की यह केस स्टडी दर्शाती है कि कैसे परंपरागत रूप

से कृषि, पशुपालन और श्रम पर आधारित यह गांव भौगोलिक रूप से सीमित, लघु आबादी वाला तथा सामाजिक रूप से जुड़ा हुआ था। अब यह गांव जिसमें अधिकांश परिवार गांव छोड़ चुके हैं तथा कुछ परिवारों द्वारा आंशिक पलायन भी किया गया है जो मूल स्थान से कुछ दूरी पर बस गए हैं। जहां मुख्य गांव में एक ही परिवार निवास करता है। विगत कुछ वर्षों में यहां से लोगों का धीरे-धीरे पलायन हुआ है। जीवन की कठिन परिस्थितियों, सङ्कटकर्त्ता के बढ़ने के साथ-साथ भनेला गांव संकटग्रस्त गांवों का जीवंत उदाहरण है। जिस कारण पारंपरिक कृषि के हास और खाली होता यह गांव लगभग अलग-थलग पड़ चुका है। जो सरकार द्वारा घोषित “भूत गांवों” की बढ़ती संख्या में शामिल हो रहा है। यह अध्ययन पलायन की प्रवृत्ति को समझने के साथ-साथ भनेला गांव की स्थिति को आधार बनाकर इस संकट की गहराई को समझने का प्रयास है। अध्ययन में भनेला गांव में पारंपरिक कृषि प्रणालियों, सामाजिक संरचना को भी समझने का प्रयास किया गया है। ताकि ऐसे गांवों को पुनर्जीवित करने के उपाय सुझाए जा सकें।

उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य भनेला गांव में हो रहे जनसंख्या हास के कारणों, पलायन की स्थिति और प्रभाव पर अध्ययन करना तथा संभावित समाधान की खोज करना है।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र केस स्टडी पद्धति जो कि प्राथमिक व द्वितीयक आकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक स्रोत के अंतर्गत स्थानीय निवासियों से साक्षात्कार और प्रश्नावली का प्रयोग कर मिश्रित पद्धति के तहत सर्वेक्षण और क्षेत्रीय अवलोकन माध्यम से डेटा संग्रह किया गया। द्वितीय स्रोतों के अंतर्गत पिथौरागढ़ जनपद के विकास खण्ड बेरीनाग से ली गई जानकारी व राज्य की पलायन रिपोर्ट, समाचार पत्रों, जनगणना आंकड़ों(सेन्सस) पर आधारित आंकड़ों को लिया गया है। डेटा संग्रहण, आंकड़े फ़िल्ड सर्वेक्षण, स्थानीय ग्रामीणों से साक्षात्कार, और जनगणना दस्तावेजों के माध्यम से एकत्र किए गए। 2011 से 2025 के वर्षों को चयनित कर तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। तथा जिला स्तर की रिपोर्ट व समाचार स्रोतों का अध्ययन, वार्तालाप, फ़िल्ड नोट्स, मोबाइल फोटोग्राफी का भी प्रयोग किया गया।

अध्ययन क्षेत्र एवं स्थिति विस्तार

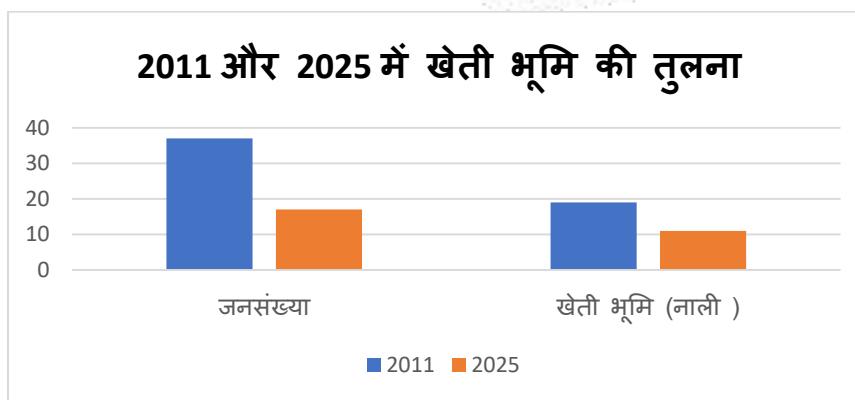
प्रस्तुत शोध कार्य का अध्ययन क्षेत्र उत्तराखण्ड राज्य के कुमाऊँ क्षेत्र में स्थित पूर्वी सीमांत जनपद पिथौरागढ़ के अंतर्गत तहसील बेरीनाग और विकास खण्ड बेरीनाग में स्थित भनेला गांव पर है। यह एक पहाड़ी क्षेत्र है जो कि जनपद पिथौरागढ़ का राजस्व ग्राम भी है। भनेला गांव से विकास खण्ड बेरीनाग लगभग 12 किमी० की दूरी पर अवस्थित है। जहां से गांव 8 किलोमीटर तक सङ्कटक मार्ग तथा शेष सङ्कटक से कटे हुए पैदल मार्ग लगभग 5 किमी० से जुड़ा हुआ है। आखरी 1किमी० की पैदल दूरी मार्ग गांव तक पहुंचने के लिए दो पगड़ंडी मार्गों में बटा है, जिसमें से एक बरसात में बंद हो जाता है। गांव का अक्षांशीय व देशान्तरीय विस्तार $29^{\circ}47'28.72N$ से $80^{\circ}05'44.00E$ तक है। यह पहाड़ी क्षेत्र समुद्र तल से औसतन 1100 मीटर में बसा उष्ण जलवायु वाला घाटी क्षेत्र है जो कि $31.601^{\circ}E$ क्षेत्रफल में फैला है। जिसमें वन 3.507 है० क्षेत्रफल फैला है।



MAP NOT TO SCALE

कृषि और भूमि उपयोग विश्लेषण

भनेला गांव में रह रहे ग्रामीण निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि है जिसे वे अपनी आजीविका और भरण पोषण हेतु प्रयोग करते हैं। गांव का कृषि योग्य भूमि का 28.554 हेक्टेक्टर में फैला है। जो पहाड़ी छेत्र सीढ़ीनुमा आकृति वाले छोटे जोतों में बटा है। सिंचाई के लिए ग्रामीण वर्षा पर निर्भर है। असिंचित क्षेत्रफल 27.383 हेक्टेक्टर तथा सिंचित क्षेत्रफल 0.171 हेक्टेक्टर है। जलमग्न भूमि का 0.106 हेक्टेक्टर तथा कृषि के अतिरिक्त उपयोग में लाई गई भूमि 0.605 हेक्टेक्टर में फैला है। पेय जल हेतु गांव में कोई नल कनेक्शन नहीं है, केवल एक धारा (नेचुरल स्प्रिंग) है। स्थानीय बुजुर्गों ने बताया कि उनके दो पीढ़ी पूर्व यहां आंग की खेती की जाती थी, जिसके रेशों से दरी, बोरी, बैंग व रस्सी बनाई जाती जो पालतू पशुओं को बांधने के प्रयोग में भी लायी जाती थी। जो कि उनके पूर्वजों के आजीविका का प्रमुख साधन था। आने वाली पीढ़ी ने यह कला धीरे-धीरे छोड़ दी और समय के साथ यह प्रथा भी उन्हीं के साथ विलुप्त हो गयी और यहां के निवासी वर्षा आधारित खेती, पशुपालन और मधुमक्खी पालन की ओर अग्रसर हो गए। गांव के तलहटी में स्थित तलाऊ और उपजाऊ भूमि है, स्थानीय निवासियों के अनुसार उस उपजाऊ भूमि पर रोपाई करके धान की खेती की जाती थी। जिसमें खेतों में छोटी स्ट्रीम/नालों (गढ़ेरा) से पानी को लाया जाता था और कच्ची नहर (गूल) बनाकर पानी को खेतों में छोड़ा जाता था। जहां पर (कविड-19) लॉकडाउन के समय तक खेती का कार्य होता था। पिछले कुछ सालों में इस भूमि पर खेती की प्रथा भी खत्म हो गई है। 2011 में 10 परिवारों द्वारा लगभग 19 नली भूमि में खेती का कार्य किया जाता था। वहीं वर्तमान समय में सभी 5 परिवार खेती करते हैं। गांव का प्रत्येक परिवार औसतन 2 नली भूमि पर कृषि कार्य कर रहे हैं, जिसका कुल कृषि क्षेत्रफल में से 11 नली भूमि में कृषि कार्य हो रहा है। कुछ परिवारों के खेत खाली पड़े हैं या आसपास के लोग उपयोग कर रहे हैं।



- 2011 की तुलना में 2025 में जनसंख्या में 54% और खेती भूमि में 42% की गिरावट आई है। यह स्पष्ट करता है कि जनसंख्या पलायन और खेतों के अनुपयोग का सीधा असर कृषि उत्पादन पर पड़ा है।

पशुपालन:- गांव के निवासी पारंपरिक कृषि और पशुपालन पर निर्भर हैं, खेती के साथ पशु पालन करना गांव की पारंपरिक कार्य है। जैसे गाय, भैंस, बकरी पालना जिनसे दुग्ध, मांस का प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है। यह गांव आधुनिकीकरण से अभी भी

दूर है खेती के पुराने औजार और बैलों द्वारा अभी भी हल जोता जाता है। पारंपरिक बीजों का प्रयोग अभी भी देखने को मिलता है। साथ ही दो परिवारों ने मधुमक्खी पालन भी किया है।

खेती में फसलें:- ग्रामीण आवास स्थान के आसपास की भूमि में मंडुवा, झांगोरा, आलू, गेहूं, धान, मक्का, जौ, बरसाती सब्जियां (जैसे लौकी, तोरई, करेला, भिंडी, बैगन, टमाटर) आदि की फसलों की खेती करते हैं और स्वयं के लिए उत्पादित कर जीवन निर्वाह कृषि करते हैं। गांव में दूर दराज की खाली पड़ी उपजाऊ भूमि की उपस्थिति दिखाती है कि खेती बंजर छोड़ दी गयी है जहां अब कांटेदार झाड़ियां और घास के फैली हुई हैं। स्पष्ट है कि पलायन का असर खेती पर पड़ा है। वर्तमान स्थिति उपजाऊ और तलाऊ भूमि अधिकतर बंजर, खेत ज्यादातर बाँझ हो चुके हैं और खेती चरमरा गई है। और बाग-बगीचे भी जंगली हो गए हैं खेतों में जंगली जानवरों (बंदरों चूहों और जंगली सुअर) की समस्या तथा जंगली पशु (जैसे बाघ-चीतल) घूमते देखे जाते हैं। घर वीरान, सामाजिक तंत्र लगभग समाप्ति की ओर है।

जनसंख्या वितरण और घनत्व में परिवर्तन

2011 की जनगणना के अनुसार भनेला गांव की जनसंख्या केवल 37 थी और परिवारों की कुल संख्या 10 थी। जिसमें पुरुष 16 (43%) और महिलाएँ 21 (57%) थीं, लिंगानुपात 1313 था। बच्चों (0-6 वर्ष) की संख्या केवल 4 (1बालक, 3बालिका) थी। स्थानीय जानकारी के अनुसार 2017 तक गांव के परिवारों के बढ़ने से यह संख्या 14 हो गई थी जिसमें गांव की जनसंख्या 53 थी। कोविड पैंडेमिक के चलते गांव में पलायन रुका रहा। परंतु वर्तमान समय में जात सर्वेक्षण के बाद भनेला गांव की जनसंख्या केवल 17 रह गयी है। जिसमें कुल परिवारों की संख्या 5 है जिसमें से मूल भनेला गांव में एक परिवार, बाकी चार परिवार ऊचाई पर स्थित 500 से 800 मीटर की दूरी पर निवास करते हैं। जिनमें पुरुष 8 (47%) और महिलाएँ 9 (53%) शामिल हैं। लिंगानुपात 1125 है। 0-6 वर्ष के कोई भी बच्चे गांव में नहीं हैं। जबकि 8 परिवार पलायन कर चुके हैं।

तालिका:1 जनसंख्या आंकड़ों का तुलनात्मक विवरण

वर्ष	कुल जनसंख्या	निवास करने वाले परिवार	पुरुष	महिला	लिंगानुपात (प्रति 1000 पुरुष)
2011	37	10	16	21	1313
2025	17	5	8	9	1125

स्पष्ट है कि भनेला गांव की जनसंख्या में विगत पिछले एक दशक में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिला है, जहां 2011 इसके बाद कुछ वर्षों में जनसंख्या अस्थायी रूप से बढ़ी, किंतु 2025 तक यह घटकर मात्र 17 व्यक्ति रह गई, 2011 में गांव की जनसंख्या 37 थी। 2017 में जनसंख्या बढ़ कर 53 हो गयी थी। यह परिवर्तन दर्शाता है कि पलायन ने गांव की जनसंख्या संरचना को गहराई से प्रभावित किया है।

तालिका:2 जनसंख्या घनत्व की गणना

वर्ष	जनसंख्या	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	जनसंख्या (व्यक्ति प्रति हेक्टेयर)
2011	37	31.601	1.17
2025	17	31.601	0.54

जनसंख्या घनत्व में यह परिवर्तन गांव से हो रहे पलायन और भूमि के घटते उपयोग को दर्शाता है। जनसंख्या और वितरण में यह बदलाव सामाजिक संरचना, कृषि संसाधनों और आजीविका के अवसरों में कमी को उजागर करता है। जनसंख्या में परिवर्तन यह 54% की गिरावट है, जो गांव में भारी पलायन को दर्शाती है।

तालिका:3 आयु वर्ग के अनुसार वितरण

आयु वर्ग	2011: व्यक्ति	2011: प्रतिशत	2025: व्यक्ति	2025: प्रतिशत
0-14 वर्ष	12	32.4%	1	5.9%
15-59 वर्ष	16	43.2%	14	82.4%
60+ वर्ष	9	24.3%	2	11.7%
कुल	37	100%	17	100%

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 0-14 वर्ष के बच्चों की संख्या 12 से घटकर 1 हो गई है, लगभग 90% की गिरावट। यह भविष्य में गांव की जनसंख्या और स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा। 15-59 वर्ष के कार्यशील लोगों की संख्या लगभग स्थिर रही, लेकिन अब उनका प्रतिशत बहुत अधिक (82.4%) है। इसका कारण बच्चों और बुजुर्गों की कमी है, न कि कार्यशील आबादी की वृद्धि। इससे पता चलता है कि अधिकांश सदस्य कार्यशील हैं। 60 से अधिक वर्ष के बुजुर्गों की संख्या भी घटकर 2 रह गई है, कारण प्राकृतिक मृत्यु और पलायन है।

पलायन की प्रक्रिया (Flowchart)

सुविधाओं की कमी

↓

रोज़गार का अभाव, खेती में घाटा

↓

युवाओं का पलायन

↓

घर खाली, खेत बंजर, संस्कृति समाप्त

↓

बुजुर्गों का अकेलापन

↓

गांव लगभग शून्य आबादी वाला बन गया

पलायन की प्रवृत्ति और कारण

स्थानीय शोध से स्पष्ट हुआ है कि इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर पलायन के मुख्य कारण बुनियादी अवसंरचना एवं अवसरों की कमी हैं। गांव में केवल एक प्राथमिक स्कूल है जो कि बंद होने के कागार पर है, सीमित पगड़ंडी मार्ग हैं। स्थानीय लोगों द्वारा बताया गया कि स्वास्थ्य-शिक्षा सुविधाएँ, आधारभूत सुविधाएँ न होने से यहां के लोग ज्यादातर पलायन कर रहे हैं। इनके अलावा गांव तक पहुंचने में कठिनाई कोई पक्की सड़क सुविधा ना होना, खराब पैदल मार्ग, प्राथमिक चिकित्सा सेवाओं की भी व्यवस्था नहीं अर्थात् कोई स्वास्थ्य केंद्र नहीं स्वास्थ्य सेवाएँ बहुत दूर हैं। और विद्यालयों की दूरी भी पलायन के अन्य कारण हैं। युवा को उच्चतर शिक्षा के लिए भी अन्य स्थानों पर जाना पड़ता है। सीमित अवसरों, और आधुनिक जीवनशैली के कारण कृषि छोड़ रोजगार की तलाश में पलायन हो रहा है। पलायन मुख्यतः रोजगार, शिक्षा, और स्वास्थ्य सेवाओं की तलाश में हुआ है। परंतु पलायन केवल सुविधाओं की कमी के कारण ही नहीं अपितु नौकरी पेशा लोगों को शहरों की चकाचौंध अपनी ओर आकर्षित करता है। तथा शहरों का रहन-सहन और खान पान भी प्रभावित करता है। अतः बेरिनाग और इससे जुड़े भनेला गांव के युवा आर्थिक, शैक्षणिक और सामाजिक अवसरों की कमी के चलते उपनगरीय क्षेत्रों की ओर जा रहे हैं। बिजली तो लगभग सभी घरों तक पहुंच चुकी है, पर गांव में सुविधाएँ अपेक्षाकृत न के बराबर हैं। इन सभी कारकों ने भनेला और आसपास के गांवों में जीवनस्तर को प्रभावित किया है।



चित्र :- खंडहर पड़े मकान तथा गाँव को जाता पगड़ंडी मार्ग।

पलायन के प्रभाव

सामाजिक रूप से प्रभाव यह देखने को मिला है कि मानसिक दबाव, युवा पलायन कर चुके हैं। सांस्कृतिक विरासत धीरे-धीरे समाप्त हो रही है सामूहिकता और स्थानीय सांस्कृतिक मैं बड़ा बदलाव आया है। साथ ही खेत परती हो जाना, स्थानीय व्यापार का विलोपन और पारंपरिक खेती जीवनयापन हेतु। अधिकतर खेत बंजर हो गए। पशुपालन में भी कमी देखने को मिली है जो आर्थिक रूप से प्रभावित कर रहा है। वहीं पर्यावरणीय प्रभाव में भूमि का नियंत्रण न होने से वनों का विस्तार, झाड़ियों और घास छेत्र का बढ़ना, मानव-वन्यजीव संघर्ष बड़ा, जंगली जनवरों का बसेरा बनता जा रहा है। मानसिक रूप से प्रभाव में एकाकीपन, बुजुर्ग परिवार, सामाजिक जीवन का अभाव, खाली घरों में चोरी, जंगली जानवरों का बसेरा और पुराने खंडहर होते मकान सामाजिक प्रभाव डालते हैं तथा संस्कृति लुप्ती, त्यौहार, और परंपराओं का क्षरण हुआ है। सामूहिक कार्य सीमित हो चुके हैं। गांव की सामाजिक संरचना कमजोर हुई है जो कि भावनात्मक व मानसिक रूप से प्रभावित करते हैं।

समस्या एवं संभावित समाधान

भनेला की पारंपरिक जीवनशैली कृषि-कैंट्रिट थी। अतीत में ग्रामीण आबादी खेती के सहरे जीवन-यापन करती थी, संपर्क साधनों की बात करें तो क्षेत्र में सड़क और परिवहन सुविधाएँ सीमित हैं। युवाओं को रोजगार, बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य की तलाश है, जबकि गांवों में परंपरागत जीवन खत्म होता जा रहा है। भनेला गांव का अद्ययन स्पष्ट करता है कि सीमांत क्षेत्र में स्थित गांवों में जनसंख्या, कृषि उपयोग, संसाधन उपभोग और सामाजिक संरचना में तीव्र गिरावट आ रही है। राज्य का सबसे बड़ा मुद्रदा पलायन है, जो इसके गठन के बाद से ही एक जटिल समस्या रही है। पलायन रोकथाम आयोग के गठन जैसे प्रयासों के बावजूद पलायन रोकना सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती बनी हुई है। शोध से पता चलता है कि पारंपरिक ज्ञान, खेती के कौशल और पशुपालन संस्कृति के कमजोर पड़ती जा रही है। गांव की जनसंख्या संरचना में युवाओं और बुजुर्गों का मिश्रण है, परंतु स्कूल/कॉलेज जाने वाले युवा भी गांव में हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि गांव पूरी तरह से पलायन के अधीन नहीं हुआ है। शिक्षा स्तर में

सुधार की संभावना है पर गांव में विद्यालय के अलावा अन्य संस्थाएं नहीं हैं। गांव को विभिन्न समूहों से जोड़ा जा सकता है। महिलाओं को कोट उद्योगों में या समूह से जुड़ी क्रिया विधि से जोड़ा जा सकता है। कृषि विविधिकरण को बढ़ावा दिया जाए, स्थानीय उत्पाद जैसे मड़वा, झंगोरा, मोटी इलायची का उत्पादन भी बढ़ाया जा सकता है। जिसके लिए ग्रामीणों को प्रशिक्षण और सहयोग व प्रोत्साहन की अवश्यकता है। जड़ी-बूटी, बिच्छू घास जैसे उत्पादों का विपणन संभव है। साथ ही सब्जी उत्पादन और जैविक खेती आधारित कृषि को भी बढ़ावा दिया जा सकता है। नजदीकी गांव से सेट छेत्र में सड़क व इंटरनेट कनेक्टिविटी को मजबूत बनाया जा सकता है। जहां संभव हो कच्चे मार्ग को पक्के मार्ग मैं बदला जा सकता है। मोबाइल स्वास्थ्य सेवा से लोगों को जागरूक किया जा सकता है। डिजिटल शिक्षा केंद्र से सरकारी व गैर सरकारी सहायता प्रदान की जा सकती है। युवा प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया जा सकता है। हर घर जल योजना जैसे लाभकारी योजनाओं से गांव को जोड़ा जाना चाहिए। साथ ही इच्छुक प्रवासियों को वापस लाने के लिए प्रोत्साहन और रोजगार के अवसर प्रदान करने चाहिए। ताकि भविष्य में पलायन को रोका जा सके। गांव का उदाहरण स्पष्ट करता है कि यदि मूलभूत सुविधाओं की पूर्ति नहीं की गई तो पलायन एक सामान्य घटना बन जाएगी। सरकार और समाज दोनों को मिलकर पुनर्वास की रणनीति पर कार्य करना होगा।

निष्कर्ष

बेरीनाग तहसील का यह गांव उन अनेकों गांवों का प्रतिनिधि है जो आज पलायन के संकट से गुजर रहे हैं। परिणाम बताते हैं कि रोजगार के अभाव, सीमित आर्थिक अवसर, शिक्षा का स्तर, और आधुनिक जीवनशैली के कारण युवा कृषि कार्य से दूर हो रहे हैं। यह भनेला गांव पिथौरागढ़ जैसे जिलों की वास्तविकता का प्रतिबिंब है। सड़क, स्वास्थ्य और शिक्षा के अभाव में गांव आज लगभग खाली हो चुका है। लेकिन सड़क विहीन गांवों में पलायन की दर अधिक है, क्योंकि वहां जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं तक पहुंच नहीं है। सतत विकास के लिए कृषि आधुनिकीकरण, रोजगार सृजन और ग्रामीण बुनियादी ढांचे में सुधार आवश्यक हैं। इन सबके बीच वर्तमान में भनेला गांव भी अपने मूल निवासियों के पलायन के कारण इन वीरान होते गांवों की श्रेणी में गिना जा सकता है। केवल एक परिवार का मूल स्थान में रहना तथा बाकी परिवारों का गांव से दूर निवास करना यह दिखाता है कि पलायन सिर्फ जनसंख्या संकट नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृति के बिखरने का संकेत भी है। खंडहर होते मकान गांव को भूत गांव में परिवर्तित कर रहा है। यदि बुनियादी सुविधाएं प्रदान की जाएं और स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर उचित योजना और नीति अपनाया जाए तो अभी भी गांव से पलायन को रोका जा सकता है। और अन्य सीमांत क्षेत्रों को पुनर्जीवित किया जा सकता है। यदि तत्काल कदम न उठाए गए, तो यह गांव भी इतिहास बनकर रह जाएगा।

संदर्भ-ग्रंथ सूची:

- Census of India (2011) Village Directory.
- Sati, Vishwambhar Prasad, (2016), "Patterns and Implications of Rural-Urban Migration in the Uttarakhand Himalaya, India", Annals of Natural Sciences, 26–37.
- JOSHI, Bhagwati, (2018), "Recent Trends of Rural Out-migration and its Socio-economic and Environmental Impacts in Uttarakhand Himalaya". Journal of Urban and Regional Studies on Contemporary India, 1–14.
- Sati, V.P. (2018), "Migration in Himalayan Settlements".
- Bhandari, Gunjan, at all, (2020), "Impact of Out-Migration on Agriculture and Women Work Load: An Economic Analysis of Hilly Regions of Uttarakhand", India, Indian Journal of Agricultural Economics, 395–404.
- Arya, N. & Vasantha, R. (2020). "Push and Pull factors in Uttarakhand migration".
- Sati, Vishwambhar Prasad, (2021), "Out-migration in Uttarakhand Himalaya: its types, reasons, and consequences", Article in Migration Letter, 281–295.
- Gupta, Sanjay Mohan, at all, (2021), "Role of DIBER-DRDO Technologies in Improving Livelihood Opportunities and Curtailing Migration in Uttarakhand: A Case Study and Impact Assessment", Defence Life Science Journal, 187–195.
- Ahmed, Raiz, at all, (2022), "A Geographical Analysis of Rural Out-Migration and Its Impact on The Rural Landscape of Selected Villages in Garhwal District (Uttarakhand)". J. Mountain Res. 147–158.
- myroots.euttaranchal.com
- uttarakhandpalayanayog.com
- livehindustan.com
- timesofindia.indiatimes.com
- KhabarUttarakhand.com